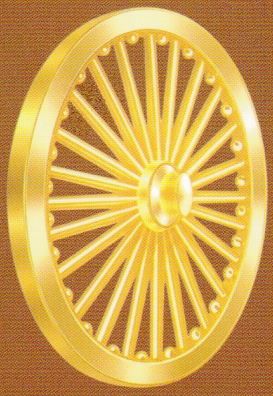
सुत्तनिपात

[मूलपालि तथा हिन्दी अनुवाद]



विपश्यना विशोधन विन्यास

सुत्तनिपात

[मूलपालि तथा हिन्दी अनुवाद]



विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

सुत्तनिपात (मूल पालि तथा हिन्दी अनुवाद)

पुस्तक कोड: **H119**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: अगस्त २०२६

मूल्य: रु.
Price: Rs.

ISBN: 978-93-90147-42-7 **Paperback/softback**
ISBN: **978-93-90147-92-2** Digital download (PDF)

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

सुत्तनिपात

[मूलपालि तथा हिन्दी अनुवाद]

विषयानुक्रमणिका

भूमिका.....7

१. उरगवग्गो 11

१. उरगसुत्तं 11

२. धनियसुत्तं.....15

३. खग्गविसाणसुत्तं 18

४. कसिभारद्वाजसुत्तं.....25

५. चुन्दसुत्तं.....27

६. पराभवसुत्तं.....29

७. अग्गिकभारद्वाजसुत्तं (वसलसुत्तं) 33

८. मेत्तसुत्तं.....38

९. हेमवतसुत्तं.....40

१०. आळवकसुत्तं.....45

११. विजयसुत्तं 47

१२. मुनिसुत्तं.....50

२. चूळवग्गो 53

१. रतनसुत्तं.....53

२. आमगन्धसुत्तं.....57

३. हिरिसुत्तं.....60
४. मङ्गलसुत्तं.....61
५. सूचिलोमसुत्तं.....63
६. कपिलसुत्तं (धम्मचरियसुत्तं).....64
७. ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं.....66
८. धम्मसुत्तं (नावासुत्तं).....72
९. किंसीलसुत्तं.....74
१०. उट्ठानसुत्तं.....76
११. राहुलसुत्तं.....77
१२. निग्रोधकप्पसुत्तं (वङ्गीससुत्तं).....79
१३. सम्मापरिब्बाजनीयसुत्तं (महासमयसुत्तं).....82
१४. धम्मिकसुत्तं.....86

३. महावग्गो..... 92

१. पब्बज्जासुत्तं.....92
२. पधानसुत्तं.....96
३. सुभासितसुत्तं.....101
४. पूरळाससुत्तं (सुन्दरिकभारद्वाजसुत्तं).....102
५. माघसुत्तं.....108
६. सभियसुत्तं.....112
७. सेलसुत्तं.....119
८. सल्लसुत्तं.....124
९. वासेट्ठसुत्तं.....128
१०. कोकालिकसुत्तं.....138

११. नाळकसुत्तं.....142
१२. द्वयतानुपस्सनासुत्तं.....150
४. अट्ठकवग्गो 157
१. कामसुत्तं.....157
२. गुहट्ठकसुत्तं.....159
३. दुट्ठट्ठकसुत्तं.....161
४. सुद्धट्ठकसुत्तं.....163
५. परमट्ठकसुत्तं.....165
६. जरासुत्तं.....167
७. तिस्समेत्तेय्यसुत्तं.....169
८. पसूरसुत्तं.....171
९. मागण्डियसुत्तं.....173
१०. पुराभेदसुत्तं.....176
११. कलहविवादसुत्तं.....179
१२. चूळब्यूहसुत्तं.....182
१३. महाब्यूहसुत्तं.....185
१४. तुवटकसुत्तं.....189
१५. अत्तदण्डसुत्तं.....193
१६. सारिपुत्तसुत्तं.....197
५. पारायनवग्गो 201
वत्थुगाथा.....201
१. अजितमाणवपुच्छा.....210
२. तिस्समेत्तेय्यमाणवपुच्छा.....212

३. पुण्णकमाणवपुच्छा 213
४. मेत्तगूमाणवपुच्छा.....215
५. धोतकमाणवपुच्छा 218
६. उपसीवमाणवपुच्छा 220
७. नन्दमाणवपुच्छा 222
८. हेमकमाणवपुच्छा.....224
९. तोदेय्यमाणवपुच्छा 225
१०. कप्पमाणवपुच्छा.....226
११. जतुकण्णिमाणवपुच्छा.....227
१२. भद्रावुधमाणवपुच्छा 229
१३. उदयमाणवपुच्छा 230
१४. पोसालमाणवपुच्छा.....232
१५. मोघराजमाणवपुच्छा.....233
१६. पिङ्गियमाणवपुच्छा 234
पारायनत्थुतिगाथा 235
पारायनानुगीतिगाथा 237
विपश्यना साधना केंद्र 240

भूमिका

सुत्तनिपात सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय का एक अति महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। भरत सिंह उपाध्याय[1] के शब्दों में 'मौलिक बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य की दृष्टि से इस ग्रंथरत्न का ऊंचा स्थान है।'

इसमें भगवान बुद्ध के जीवन की दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी उल्लेख है, उन्होंने घर क्यों छोड़ा और क्यों प्रव्रजित हुए तथा उन्होंने किस तरह की तपस्या की– ये बातें पबज्जासुत्त, अत्तदण्डसुत्त और पधानसुत्त में वर्णित हैं। इनसे भी इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

सुत्तनिपात की प्राचीनता दो और दृष्टिकोणों से प्रमाणित होती है। पहला दृष्टिकोण है भाषा का जो वैदिक भाषा के निकट है। विद्वानों ने उदाहरण देकर यह सिद्ध कर दिया है कि सुत्तनिपात की भाषा वैदिक भाषा से मिलती-जुलती है। इसे प्रमाणित करने के लिये समूहतासे, पच्चयासे, चरामसे, भवामसे आदि शब्दों को उद्धृत किया जाता है।[2]

इसकी प्राचीनता एक और अकाट्य प्रमाण से भी सिद्ध होती है। अशोक के भाब्रू शिलालेख के सात बुद्ध के उपदेशों में चार सुत्तनिपात में हैं। ये सुत्त हैं विनयसमुकंसे, मोनेय्य सुत्त, मुनिगाथा तथा उपतिस्सपसने जो क्रमशः सुत्तनिपात के नालकसुत्त, तुवटकसुत्त, मुनिसुत्त और सारिपुत्तसुत्त हैं।

सुत्तनिपात में उरगवर्ग, चूलवर्ग, महावर्ग, अष्टकवर्ग और पारायणवर्ग हैं तथा कुल मिलाकर 54 सुत्त और 16 पुच्छा और 2 वत्थुगाथा तथा पारायनत्थुतिगाथा है।

उरगवर्ग के **उरगसुत्त** में यह कहा गया है कि क्रोध मनुष्य का बड़ा शत्रु है। यदि कोई उसे उस तरह दूर कर देता है जैसे औषधि से सर्प के विष को तो वह संसार सागर के इस पार तथा उस पार को वैसे ही छोड़ता है जैसे सांप अपनी पुरानी केंचुली को। उसी तरह राग, तृष्णा, मान आदि को त्यागने की बात कही गयी है। ये ही तो मनुष्य के शत्रु हैं और भवचक्र के कारक हैं।

धनियसुत्त में गार्हस्थ्य सुख और भिक्षु जीवन के सुख की तुलनाकर भिक्षु जीवन के सुख को श्रेष्ठतर कहा गया है। मार की दस प्रकार की सेना का भी वर्णन यहां है।

कसिभारद्वाजसुत्त में लौकिक कृषि और आध्यात्मिक कृषि में अंतर दिखाया गया है। कसिभारद्वाज की कृषि से जो उपज होती है, उससे भूख पूरी तरह शांत नहीं होती है। पुनः पुनः भूख लगती है और पुनः पुनः भूख शांत करने के लिए खाना पड़ता है। पर बुद्ध की आध्यात्मिक कृषि से जो उपज होती है उससे भूख सदा के लिए मिट जाती है।

मनुष्य का पराभव क्यों होता है– इसे सविस्तर **पराभवसुत्त** में दिखाया गया है।

अग्गिक भारद्वाजसुत्त में ब्राह्मण और वृषल (शूद्र) में अंतर दिखाया गया है और जन्म को महत्त्व

1. भरत सिंह उपाध्याय - (पालि साहित्य का इतिहास, (पृ0 291) चतुर्थ संस्करण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन 2000)।
2. डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित, पुनर्मुद्रण 2003

न देकर कर्म को महत्त्व दिया गया है। जन्मना मनुष्य ब्राह्मण नहीं होता, कर्मणा होता है। इस सुत्त में सामाजिक नीति शास्त्र की भी बात कही गयी है। बूढ़े माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, जो भिक्षु हैं, भूखा है उन्हें भोजन अवश्य देना चाहिए।

मेत्तसुत्त में मेत्ता (ब्रह्मविहार) पर प्रकाश डाला गया है।

हेमवतसुत्त तथा आलवक सुत्त में यह दिखाया गया है कि बुद्ध का प्रभाव यक्षों पर किस तरह पड़ा।

मुनिसुत्त में मुनि के लक्षण गिनाये गये हैं। जब कोई इन लक्षणों से युक्त होता है, संपन्न होता है तो वही सच्चे अर्थ में मुनि है।

रतनसुत्त में यह विस्तार से बताया गया है कि बुद्ध, धर्म और संघ रत्न क्यों हैं। इसमें यह भी दिखाया गया है कि वैशाली तथा लिच्छवी नाम क्यों पड़ा?

आमगन्धसुत्त में बताया गया है कि पाप करना आमगन्ध है, शारीरिक, वाचसिक तथा मानसिक अकुशल कर्म आमगन्ध है, मांस-मछली खाना नहीं।

हिरिसुत्त में अच्छे और सच्चे मित्र के लक्षण बताये गये।

सूचिलोमसुत्त में तृष्णा को सभी वासनाओं का मूल कहा गया है।

ब्राह्मण धम्मिकसुत्त ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। यहां यह दिखाया गया है कि ब्राह्मणों में जब तक लोभ नहीं था, हिंसा नहीं होती थी। उनमें जब लोभ आ गया तो यज्ञों में गोहिंसा का प्रारंभ हुआ।

इसी सुत्त में यह कहा गया है कि गायें हमारी परम मित्र हैं और इन्हीं से हमें औषधियां प्राप्त होती हैं। ये अन्नदा, बलदा, वर्णदा तथा सुखदा हैं। इसी सुत्त में यह कहा गया है कि गोहिंसा के पहले तीन ही रोग थे, जबसे यज्ञ में हिंसा होने लगी 98 रोग उत्पन्न होने लगे।

धम्मिकसुत्त में गृहस्थों तथा भिक्षुओं के धर्म पर प्रकाश डाला गया है।

पधानसुत्त में गोतम और मार के बीच कथोपकथन है। यहां मार की दस प्रकार की सेना जैसे काम अरति, भूख-प्यास, तृष्णा आदि भी गिनाई गयी है।

सुभासितसुत्त में यह बताया गया है कि चार अंगों से समन्वागत सुभाषित वचन है।

सुन्दरिक भारद्वाज में हव्य (पूरलास) के योग्य कौन है यह सविस्तर बताया गया है।

माघसुत्त से पता चलता है कि कैसे व्यक्ति को दान देने से महाफल मिलता है।

सभियसुत्त में बुद्ध के समय के छः शास्ताओं का वर्णन है। इसी सुत्त में ब्राह्मण, श्रमण, स्नातक, नाग, क्षेत्रजिन, श्रोत्रिय, पंडित, मुनि, आर्य, परिव्राजक आदि के बारे में भगवान के उत्तर हैं।

वासेट्ठसुत्त में वर्ण व्यवस्था (जाति प्रथा) का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडन किया गया है। ब्राह्मण बड़ा इसलिए नहीं है कि वह ब्राह्मण जाति में पैदा हुआ है और न शूद्र इसलिए छोटा है कि वह शूद्र जाति में पैदा हुआ है। कोई बड़ा है या छोटा– इसका आधार उसका कर्म है। कुशल कर्म ही किसी को बड़ा बनाता

है और अकुशल कर्म किसी को छोटा।

सुत्तनिपात में पारायणवग्ग है जहां बावरी ब्राह्मण के सोलह शिष्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भगवान बुद्ध ने दिये हैं। यहां जो प्रश्न पूछे गये हैं वे संसार, तृष्णा, दुःख तथा लेप संबंधी हैं। संसार किससे आवृत है? किससे यह प्रकाशित नहीं होता? इसका लेप क्या है ? महाभय क्या है? तृष्णा की सर्वत्र बहती हुयी धाराएं कैसे निरुद्ध हो सकती हैं ? प्रज्ञा, स्मृति तथा नामरूप का अंत कहां होता है? इस संसार में कौन संतुष्ट है? किसमें चंचलताएं नहीं हैं? प्रज्ञा, स्मृति और नाम-रूप का अंत कहां होता है? शैक्ष्य तथा अशैक्ष्य की चर्या क्या है? कौन है जो संतुष्ट है? कौन है ऐसा जिसमें चंचलता नहीं है? कौन है जो तृष्णा के पार चला गया है? यज्ञ करने वाले क्या जन्म तथा जरा के पार चले जाते हैं? कैसे धीर पुरुष जन्म, जरा, रोग, शोक विलाप आदि की बाढ़ को पार करते हैं? कैसा व्यक्ति दुःख से मुक्त हो सकता है। कैसा व्यक्ति जन्म, जरा के पार चला जाता है? बिना सहारा के कोई वैसे जन्म-मरण रूपी भयंकर बाढ़ को पार कर सकता है? मुनि की पहचान क्या है? उनका ज्ञान या उनकी आजीविका क्या सभी ब्राह्मण जाति और जरा से आच्छादित है? कौन है जो आश्रव से रहित हो गया है? तृष्णा को समूल उखाड़ने का धर्म क्या है? जो वासनातीत, तृष्णातीत, संदेहातीत है उसका विमोक्ष कैसा होता है? जरा और मृत्यु रूपी भयंकर बाढ़ के आने पर सुरक्षा का द्वीप क्या है? कौन-सा धर्म जानने पर जन्म तथा जरा को दूर किया जा सकता है? मार किस मनुष्य के पीछे पड़ जाता है? लोक का संयोजन क्या है, उसकी विचरण भूमि क्या है और किसके प्रहाण से निर्वाण की अवाप्ति होती है? संसार को किस रूप में देखने वाले को मृत्युराज मार नहीं देख पाता?

संसार में अनेक प्रकार के दुःख कहां से उत्पन्न होते हैं आदि इन प्रश्नों के उत्तर जो भगवान बुद्ध ने दिये हैं, यदि उनमें से एक भी प्रश्न के अर्थ को अच्छी तरह समझकर कोई जीवन जीये, उनके बताये मार्ग पर चले तो वह जन्म जरा-मृत्यु के पार चला जाय।

सुत्तनिपात के प्रायः सारे सुत्त पालि साहित्य के अनमोल रत्न हैं।

